Vol 3 Issue 8 Sept 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-8, Sept-2013
ISSN 2230-7850

हरियाणवी लोकविनोद की अपरिचित विधाएं एक अवलोकन

महासिंह पूनिया
हिन्दी–विभागाध्यक्ष एवं क्यूरेटर, धरोहर हरियाणा संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

सारांश :हरियाणवी बोली में लोक विनोदी प्रवृत्ति की बहुलता देखने को मिलती है । इस बोली का इतिहास हजारों साल वर्ष पुराना है । इसके इतिहास पर अगर हम दृष्टिपात करें तो इसका सीधा सम्बन्ध वैदिक काल से है । वैदिक काल के असंख्य शब्द हरियाणवी बोली में आज भी : यों के त्यों विद्यमान हैं । वैदिक काल में जहां संस्कृत साहित्य की भाषा थी, वहीं पर हरियाणवी लोकभाषा के रूप में जनमानस की भावनाओं को अभिव्यक्त करने का काम कर रही थी । इसका प्रमाण हरियाणवी भाषा में अनेक वैदिक कालीन शब्द का समायोजन है । इतना ही नहीं, संस्कृत के असंख्य शब्द हरिणायवी भाषा में समाहित हैं । इससे पता चलता है कि कालान्तर में यह भाषा संस्कृत के साथ–साथ लोकजीवन की भाषा रही हैं । इतना ही नहीं, संस्कृत के पश्चात् प्राकृत भाषा का स्वरूप जो 2000 इ. पू. से लेकर 100 ई. तक चलता रहा, में भी असंख्य शब्द हरियाणवी भाषा में देखने को मिलते हैं ।

प्रस्तवाना :

इसके साथ–साथ अपभ्रंश भाषा का विकास 500 ई. से 1000 ई. तक माना जाता है । इसमें भी हरियाणवी भाषा के अनेक अंश दिखाई देते हैं । इसके अतिरिक्त गोरखनाथ की वाणी का यह उदाहरण – श्कंटक देश, कठोर नर, भैंस मूतर को नीर, करमों का मार्या फिरै, बांगर बीच फकीरश हरियाणवी भाषा का उदाहरण नहीं, तो क्या है ?आदिकाल में चन्द्रबरदाई द्वारा लिखे गए पृथ्वीराज रासो ग्रंथ में हरियाणवी अंश देखने को मिलते हैं । जैसे– ' भगा हुआ जो मारिया बहिणु म्हारा कन्त', हरियाणवी नही ंतो क्या है । तत्पशात् अकबरकालीन कवि वल्य की हस्तलिचित पुस्तक कुकडा मंजारी चपउई पुस्तक में 'कूकडी कूकडा जीवा लगई–सा मंजरी तव बिलखी भमई', में भी हरियाणवी का ही बोलबाल है । तत्पश्चात् कबीर जैसे संत ने भी अपनी वाणी में हरियाणवी के 'खोद–खाद धरती सहै, चालती चाक्की देखकै दिया कबीरा रोए', आदि अनेकों ऐसे हरियाणवी भाषा के उदाहरण दिए हैं, जो इसकी प्राचीनता के द्योतक हैं । इतना ही नहीं, यह परम्परा आगे बढी और संत आत्मानन्द ने अपनी 'राम तेरा रम्या हुआ जर जर म्हं', ने भी हरियाणवी भाशा की परम्परा को आगे बढाया । इसके पश्चात् सूरदास, जो स्वयं हरियाणवी थे, ने भी अपनी रचनाओं में हरियाणवी लोकभाशा को प्रमुख स्थान प्रदान दिया । इसके पश्चात् अनेक सूफी संतो तथा रामकाव्य से जुडे हुए भक्तों ने भी हरियाणवी बोली को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया । इस भाषा को और अधिक उत्साह उस समय अधिक मिला, जब दिगी में अमीर खुसरों ने हरियाणवी बोली में जकडियां, कडकों, नुस्खों, सुखनों आदि की रचना कर इसकी प्रामाणिकता का सबूत अपने साहित्य लेखन के माध्यम से दिया, जिसका सशक्त उदाहरण – 'खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चलाय, आया कुत्ता चाा गया, तू बैठी ढोल बजाय'– हरियाणवी नही ंतो क्या है ?जिसे लोगों ने खडी बोली कहा उसका विकास भी हरियाणवी से ही हुआ । उसके पश्चात् संतोष सिंह, हाली, बाबा फरीद आदि कवियों ने हरियाणवी भाषा एवं शब्दों का सदुपयोग करते हुए अपनी रचनाओं को अंजाम तक पहुंचाया । इतना ही नहीं, दक्खिनी हिन्दी में हरियाणवी भाषा के अनेकों ऐसे शब्द पाए जाते हैं, जिससे इसकी प्रामाणिकता को और अधिक बल मिलता है । कहना न होगा, रामायण, महाभारत, गीता सरीखे ग्रंथ भी हरिणायवी भाषा में विद्यमान हैं। इस प्रकार यह परम्परा आगे बढती चली और अंग्रेजों तक आ पहुंची । जॉर्ज ग्रियर्सन ने लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंण्डिया में बांगरू, हरियाणी तथा जाटू के नाम से इस भाषा को कलमबध्द किया । इतना ही नहीं, रोहतक के तत्कालीन डी.सी. श्री ई. जोसफ ने हरियाणी भाषा की जाटू ग्लासरी बनाई । हरियाणवी पर बांगरू का संरचनात्मक अध्ययन के नाम से डॉ. जगदेव सिंह ने डिस्क्रीप्टिव ग्रॉमर ऑफ बांगरू के माध्यम से हरियाणवी लिपि का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर इसकी प्राचीनता एवं प्रामाणिकता को स्पष्ट किया । इतना ही नहीं, डॉ. नानम चन्द ने हरियाणवी भाषा का उद्गम और विकास ग्रंथ के माध्यम से भी इस भाषा की प्रामाणिकता को सिध्द करने का प्रयास किया है । इसके साथ ही शंकरलाल यादव ने हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य तथा रघुवीर मथाना / डॉ. बाबु राम ने हरियाणवी लोकसाहित्य का इतिहास के माध्यम से हरियाणवी का जो इतिहास लिखा है । हरियाणवी लोकसाहित्य में अनेकों विधाएं लोकजीवन में आज भी प्रचलित हैं ,जिनको अभी तक संकलित एवं सैध्दांतिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है ।

हरियाणवी बोली में लोकविनोदी प्रवृत्ति से जुडी हुई अनेको विधाएं हरियाणवी लोक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं । हरियाणवी लोकसाहित्य में आज भी असंख्य अपरिचित लोकविधाएं लोकजीवन का हिस्सा हैं, किंतु अभी तक न तो इन विधाओं को सैध्दांतिक स्वरुप प्रदान किया गया है और न ही इन पर गंभीर रूप से शोध हुआ है । इन विधाओं में मल्होर या मल्हावे गीत, लोरियां, बालगीत, वाणी–विलास, तुकबंदियां, ग्रामोक्तियां, ढकोसले, कडके, छन्न, व्योक्तियां, दोहरे, लोकगाहे, नुक्ते, सुक्तियॉ, बारा, कहबत, कथोक्तियां, शेर, बुझावल, खेलगीत, आल्हाख पहेलियां, नेवे, मुकरियां, सूखने, लोकप्रार्थनाएं, निस्बतें, आर्शीवचन, उक्तियां, लघुकथाएं, लोकपद, जकडियां तथा लोकविनोद की चौबीस विधाओं में गप्प, गपोड, गडंग, मसखरी, बतंगड, मजाक, ब्योंक, चीड, हाजिर जवाबी, हंसी–ठठ्डा, फरडे, अंघाई, बात, नकल, तिगली, ठोला–ठसका, राडका, मिसल, चुटकला, चुटकली, मजाक, उध/अलबाध, टयोंट, ठिठौली आदि शामिल हैं ।

विश्लेषणात्मक दृष्टि से हरियाणवी लोकसाहित्य की इन अपरिचित विधाओं का यदि शोधपरक दृष्टि से विश्लेषण करें, तो इनके ऊपर अलग से हरियाणवी लोकसाहित्य का इतिहास लिखा जा सकता है । लोकजीवन में बिखरे पडे इन मोतियों को अन्वेशणात्मक दृष्टि से सैध्दांतिक स्वरूप प्रदान करने की आवश्यकता है । विश्लेषणात्मक दृष्टि से यहां पर उक्त विधाओं का एक–एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है , ताकि शोधार्थियों को इन विधाओं के विषय में जानकारी हासिल हो सके ।

मल्होर गीत :

हरियाणवी लोकजीवन में किसान कुआं खोदते समय, कोल्हू चलाते समय, पानी देते समय जिन गीतों का गायन करते थे, उन्हें मल्होर गीत कहा जाता हैं । इनमें मनोरंजनात्मक तथा प्रश्नात्मकता की बहुलता देखने को मिलती है । उहारण के लिए –

जोब्बण चाल्या छूट कै होलिया लाम्बी राह,
क्यूंक्कर पकडूं भाजके मेरै गोड्यां मै दम नाह ।
मेरी बावली मल्होर ।।

लोरियां :

हरियााणवी लोक जीवन में छोटे बगोां को सुलाने तथा उनके मनोरंजन के लिए गाये जाने वाले लघु गीतों को लोरियों का नाम दिया गया है ।

उदाहरण के लिए –

मेरे सोज्या मुन्ना रे.....
मेरे सोज्या मुन्ना रे .....
सोल्या सोज्या रे .....
मेरे सोज्या राजा रे, सोज्या मुन्ना रे, सोज्या सोज्या ऊ ऊ ऊ ऊ.....
तेरी दादी हंसैं रे,
दिवा सा चस्सै रे,
तेरे लाड लडावै रे,

महासिंह पूनिया,"हरियाणवी लोकविनोद की अपरिचित विधाएं एक अवलोकन"
Indian Streams Research Journal Vol-3, Issue-8 (Sept 2013): Online & Print

तन्नैं गोद खिलावै रे,
मेरे सोज्या राजा रे, सोज्या मुन्ना रे सोज्या सोज्या ऊ ऊ ऊ ऊ.........।

बालगीत :

लोकजीवन मेंबगों द्वारा गाये जाने वाले छोटे–छोटे गीतों को बालगीत की संज्ञा दी गई है । इन गीतों में उद्देश की अपेक्षा मनोरंजनात्मकता की बहुलता देखने को मिलती है । उदाहरण के लिए –

गंजे रे गंजे टेरम टेर,
हाथ में खुटिया बाछडू घेर,
बाछडू बडगे ढाक्खां मैं,
मार गंजे की काक्खां मै ।
काख पडी बरोली मैं,
गंजा पडा खटोली मैं,
खटोली का पावा टूटग्या,
ग्ंजे का सिर फूट्टण दे,
मन्नै तमाखू कूट्टण दे ।

वाणी–विलास :

बगो अपने मनोरंजन के लिए लोकजीवन में घटी हुई घटनाओं को लेकर मनोरंजनात्मक तरीके से लोकवाणी में जो तुकांत लघुफीत परस्तुत करते हैं, उनको वाणी–विलास कहते हैं ।

उदाहरण के लिए –
मोदा अर चतरू दो भाई,
नूण मिर्च की बहु बणाई,
जो रै मोदे सीत लिया,
पाज्छै तै चतरू पीट लिया ।

तुक बंदियां :

लोकवाणी के ऐसे बंध जिनका अंत तुक्के के साथ होता हो, अर्थात् जिनमें तुकात्मकता की प्रधानता हो, उन्हें हरियाणवी लोकजीवन में तुकबंदियां कहा जाता है । उदाहरण के लिए –

गोज्छी छोज्छी, कडक मदाणा, डीगल–बेरी मरद भराणा ।
बेरा नां बाडी, चाल पड्या डिडवाडी ।।
मैं गया शामडी, मेरै गयांदे ही मारी कामडी ।।

ग्रामोक्तियां :

ग्रामोक्तियां लोकजीवन में प्रचलित वे उक्तियां हैं, जो गांवो के चरित्र को उजागर करती हैं । हरियाणवी लोकजीवन में इन उक्तियों की संख्या विपुल मात्रा में देखने को मिलती है । उदाहरण के लिए –

आंचरे में फैंचरा, गंगाणा गूला गाम,
जागसी बैठी चौंत्तरे, मबतन करै सलाम ।
या
ककरोई भाई रोई, गुमाणा गास खाणा,
राह में पडै फरमाणा, ना नाहणा ना बाणा,
गुहणे आले मूंड तोडैं, मुहाणा घणा गिरकाणा ।

ढकोसले :

लेक में प्रचलित ऐसी तुकबन्दी जिनमें सम्भव–असम्भव बातों के कारण अर्थ ग्रहण करना कठिन हो ढकोसले कहे जाते हैं । ग्रामीण जीवन में ये हास्य के सर्वोत्तम साधन हैं । उदाहरण के लिए –

एक अचंभा मुन्नै सुण्या, के बिगी काढै धार,
कुत्ता चाल्या सीत मागण, सिर पै धरकै झार ।

कडके :

कडके से अभिप्राय कडक बात से है जो त्वरित छंद के माध्यम से अभिव्यक्त की जाए, कडका कहलाती है । हास्यपूर्ण उक्ति को कडके की संज्ञा दी जाती है । कडका शब्द कडवक छंद का अपभ्रंषित स्वरूप है । लय से चलने वालीहै, शब्द योजना जो दो पंक्तियों में अभिव्यक्त होती हो, कडका कहलाती है । उदाहरण के लिए –

रै बाली तेरे चेहरे पै आगी लाली तेरे खेत,
पडे खाली तन्नैं तीन दुकान खोली पर एक भी ना चाली ।
या
ममचंद की रांड, कदे काट्या करती झांड,
आज खरडा पै सेक्खै सै खांड ।

छन्न :

वास्तव में 'छन्न 'शब्द छंद का ही अपभ्रंषित स्वरूप है । छनद की बिगडी हुई शैली में 'छन्न'को प्रस्तुत किया जाता विवाह गीतों में श्लोक अथवा छंद के रूप में कुछ तुकांत मुक्तक गाए जाते हैं । ये मुक्तक प्रायः दोहा दन्द में होते हैं । उदाहरण के लिए –

छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर आगी,
बीरमती नै तो ब्याह चागे, संतरो नै दे दयो मांगी ।
या
छन्न पकइया, छन्न पकइया, छन्न के ऊपर बादाम,
इस भूंडी सी नै छोडकै, सब नै मेरी राम–राम ।

व्यंगोक्तियां :

लोकजीवन में प्रचलित ऐसी उक्तियां, जिनमें व्यंग्य को प्रधानता होती है, उनको व्यंग्योक्तियां कहा जाता है । उदाहरण के लिए –

गठवालां जाट, पत्थर का बाअ्ट,
जितणी बै तोल्लो उतणी बै घाअ्ट ।
या
कुत्ता पालै वो कुत्ता, सास घर जमाई कुत्ता,
बाहण घर भाई कुत्ता, सब कुत्तों का ओ सरदार,
जो सदा रह्वै बेटी के द्वार ।

दोहरे :

दोहे का विकृत रूप दोहरे है । दोहे वास्तव में हरियाणवीं लोक जीवन में प्रचलित वो बाण हैं, जिनके चलते ही सवत ही हंसी के फुवारे फूट जाते हैं । हालांकि शास्त्रीय दृष्टि से इन पर मात्राओं का कोई बन्धन लागू नहीं होता फिर भी मोटे रूप में लोक जीवन में प्रचलित दो तुकांत पक्तियों को दोहरे की संज्ञा दी गई है । उदाहरण के लिए –

रामदिया बैठा खाट पै बाट रह्या था बाण ।
बेरा नी के ऊक चूक लागी पडया नाड के ताण ।
या
रामधन बैठया रूख पै खेल रहा था खेल ।
धोती की लांगड फंसगी पडते ही बणगी रेल ।

लोकगाहे :

लोकगाहा लोकजीवन में प्रचलित वह ज्ञानात्मक पहेली है, जो सवाल अथवा जवाब के रूप में तुकांत स्वरूप के माध्यम से पूछी जाती है । हरियाणवी लोकजीवन में गुरु और चेले को लेकर अनेक लोग गाहे प्रचलित हैं । उदाहरण के लिए –

गुरु अपने चेले से पूछता है –
गड–गड होक्का बाज्या सुणले मेरी नै,
नौ मै तै गये तीस बाकी रेहगे कै ?

तो शिष्य जवाब देता है कि आठ महीने । जब कोई औरत गर्भवती होती है तो उससे कोई औरत पूछने लगती है तो वह इसी तरह जवाब देती है कि नौ महीने यानि एक महीना गया तो आठ महीने बचते हैं ।

नुक्ते अथवा नुस्खे :

हरियाणवी लोकजीवन में प्रचलित ऐसी दोहात्मक एवं तुकांत्मक किवदंतियां, जो नुस्खों के माध्यम से लोकपारम्परिक स्वास्थिक ज्ञान प्रदान करती है, ऐसी उक्तियों को नुस्खे कहा जाता है । उदाहरण के लिए –

कुवांर करेला चैत गुड, साम्मण साग ना खा,
कौडी खर्च गिरह की, रोग बिसावण जा ।
या
दिन मैं जो दो बै खावै, वो माणस भगवान कुहावै,
जो नर खावै बेअनुमान, उसनै जाणिए पशु समान ।

सुक्तियां :

हरियाणवी लोकजीवन में प्रचलित वो तुकातत्मक उक्तियां, जिनसे सीख एवं ज्ञान मिलता हो, उनको सुक्तियां कहा जाता है । उदाहरण के लिए–

ढक्या मुंह गिदौडा सा,
खुल्या मुंह बिटौडा सा ।
या
दूर जमाई फूल बराब्बर, शहर जमाई आद्धा,
घर जमाई गधे बराब्बर, मन चाहा जब लाद्या ।

लोकबारे :

बारा बारहों महीने गाये जाना वाले पुरुषों का गीत है, जो खेतों में कुआं खोदते समय मिट्टी निकालते समय गाया जाता है । वास्तव में यह चडस के द्वारा पानी की व्यवस्था करने के माध्यम से लोगों के मनोरंजन का माध्यम है । इसके माध्यम से पुरुषों की जहां ज्ञान परीक्षा होती है, वहीं पर दूसरी ओर मनोरंजन भी होता है । उदाहरण के लिए –

बारा ल्याइ ओ रै, राम मनाइयो रै ।
या
कूण तो जग में एक कहिए, कूण जगत मैं दोय,
कूण तो जागता रह्वै जगत मै, कुण पड्या सै सोय ।
राम जगत मैं एक कहिए, चॉद अर सूरज हैं दोय,
पाप जगत मैं जागता, धरम जगत में सोय ।

कहबत :

लोकजीवन में प्रचलित अनुभवों के आधार पर प्रचलित वो उक्तियां है, जो तुकांत तथा अतुकांत दोनों ही स्वरूपों में देखने को मिलती हैं । उदाहरण के लिए –

पूडी ना पापडी,
पटाक दे सी बहू आ पडी ।
या
उजड देख गूगार कूदैं, ढाल देख बैरागी ।
खीर देख बाहमण कूदै, तीनों होज्या रागी ।

लोकप्रार्थनाएं :

लोकजीवन में विविध विषयों को लेकर प्रचलित प्रार्थना ओं को लोकप्रार्थनाएं कहा जाता है । उदाहरण के लिए – सोते समय की प्रार्थना

धरती करया बिछावण,
अम्बरी कर्या गलेफा,
पोढो राजा भरतरि,
चौकी दो अनेक,
लंका सा कोट,
समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत वार न लाई,
गया हा काला बजरंगी का ताला ।
या
उठते समय की प्रार्थना

धरती माता तू सूधी, तेरे से बडा न कोय,
तेरे ऊपर पग धरै तो सुख मुंह वासा होय ।

इस प्रकार हरियाणवी लोकजीवन में अनेकों ऐसी लोविधाएं प्रचलित हैं, जिनका यदि संकलन कर उदाहरण दिये जाएं, तो उन पर पूरा शोध ग्रंथ लिखा जा सकता है । हरियाणवी लोकजीवन में कथोक्तियां, बुझावल, खेलगीत, आल्हा, पहेलियां, नेवे, मुकरियां, सूचाने, निस्बतें, आर्शीवचन, उक्तियां, लोकपद, जकडियां आदि ऐसी विधाएं हैं, जिन पर अभी तक गहन रूप से शोध नहीं हुआ है । इसके अतिरिक्त हरियाणवी लोकजीवन में कदम–कदम पर हास्य बिखरा हुआ पडा है । लोकविनोद की चौबीस विधाएं इसी हास्य का महत्वपूर्ण अंग है, जिनको अभी तक सैध्दांतिक स्वरूप प्रदान नहीं किया गया है, इनमें–गप्प, गपोड, गडंग, मसखरी, बतंगड, मजाक, ब्योंक, चीड, हाजिर जवाबी, हंसी–ठठ्ठा, फरडे, अंघाई, बात, नकल, तिगली, ठोला–ठसका, राडका, मिसल, चुटकला, चुटकली, मजाक, उध/अलबाध, टयोंट, ठिठौली आदि शामिल हैं।

इस प्रकार हरियाणवी लोकसाहित्य की इन अपरिचित विधाओं को सैध्दांतिक स्वरूप प्रदान करने के लिए गांव–गांव में जाकर इनको संकलित कर इनके ऊपर शोध करने की आवश्यकता है, ताकि आनेवाली पीढियां लोकजीवन में प्रचलित इन अपरिचित विधाओं से वंचित न रह सकें ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1.सम्पादक डॉ. परमानन्द पांचाल, भारत की महान् विभूति अमीर खसरो व्यक्तित्व और कृतित्व,
2.सम्पादक कालिका प्रसाद, बृहत् हिन्दी कोश,
3.सम्पादक डॉ. जयनारायण कोशिक, हरियाणवी हिन्दी कोश,
4.डॉ. शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य,
5.रघुबीर मथाणा एवं डॉ. बाबू राम, हरियाणवी लोकसाहित्य का इतिहास,
6.आलेख सरनाम शर्मा, कबीर की उल्टबासियां,
7.आलेख सरनाम शर्मा, कबीर की उल्टबासियां,
8.सम्पादक, विजयेन्द्र स्नातक, कबीर,
9.सम्पादक, शमशेर अहमद खान, भारत भारती के सगो सपूत अमीर खुसरो,
10.सम्पादक, शमशेर अहमद खान, भारत भारती के सगो सपूत अमीर खुसरो,
11.डॉ. महासिंह पूनिया, आलेख : हरियाणवीं लोकवाणी– विलास की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति,
12.डॉ. महासिंह पूनिया, आलेख : हरियाणवीं लोकवाणी– विलास की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति,
13.एक साक्षात्कार बीरमती देवी, गांव बिंझौल, जिला पानीपत,
14.लघु शोध प्रबन्ध हरियाणवीं लोकसाहित्य में हास्य–व्यंग्य,
15.सम्पादक, डॉ. परमानन्द पांचाल, अमीर खुसरो व्यक्तित्व और कृतित्व,
16.एक साक्षात्कार बीरमती देवी, गांव बिंझौल, जिला पानीपत,
17.एक साक्षात्कार गंगा राम खाती, गांव डिडवाडी, जिला पानीपत,
18.लघु शोध प्रबन्ध हरियाणवीं लोकसाहित्य में हास्य–व्यंग्य,
19.एक साक्षात्कार बीरमती देवी, गांव बिंझौल, जिला पानीपत,
20.एक साक्षात्कार, प्रो. पूर्णचन्द शर्मा, लोकसाहित्य समीक्षक, रोहतक,
21.लघु शोध प्रबन्ध हरियाणवीं लोकसाहित्य में हास्य–व्यंग्य,
22.एक साक्षात्कार श्रीमती छन्नो देवी, गांव डिडवाडी, जिला पानीपत,
23.सम्पादक, शमशेर अहमद खान, अमीर खुसरो,
24.सम्पादक डॉ. परमानन्द पांचाल, अमीर खसरो व्यक्तित्व और कृतित्व,
25.एक साक्षात्कार गंगा राम खाती, गांव डिडवाडी, जिला पानीपत,
26.एक साक्षात्कार, राजकिशन नैन, गांव अजायब, जिला रोहतक,
27.एक साक्षात्कार, राजकिशन नैन, गांव अजायब, जिला रोहतक,
28.एक साक्षात्कार श्रीमती राजवंती देवी, गांव दूपेडी, जि करनाल,
29.एक साक्षात्कार प्रवीण कादयान, कुरुक्षेत्र,
30.सम्पादक डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, पण्डित लख्मीचन्द ग्रंथावली,
31.लघू शोध प्रबन्ध हरियाणवीं लोकसाहित्य में हास्य–व्यंग्य ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net